आधुनिक राजस्थांनी कवितावां

भाग-ग्रेक



संपादण: मीठेश निरमोही



अंजलि प्रकासण

अंजलि प्रकासण
बिरांमणां री गळी,
उम्मेद चौक, जोधपुर (राजस्थांन)

आधुनिक राजस्थांनी कवितावां

भाग-अेक



संपादण: मीठेश निरमोही



अंजलि प्रकासण
बिरांमणां री गळी,
उम्मेद चौक, जोधपुर (राजस्थांन)

1983

सगळा अधिकार : मीठेश निरमोही
प्रकासक : अंजलि प्रकासण विरांमणां री गळी, उम्मेद चौक,
जोधपुर (राजस्थांन)
मुद्रक : सुपर युनाईटेड प्रिण्टर्स
मेड़तिया गेट दरवाजे रै बारै, जोधपुर
मुखौळ : प्रदीप सोनी अर सलीम शेख
पेलो छापो : 1983 (राजस्थांन दिवस)
मोल : बीस रिपिया

AADHUNIK RAJASTHANI KAVITAVAN
Edit by : Meethesh Nirmohi Rs. 20/-

म्हारी बात

आधुनिक राजस्थांनी कविता री विकास जात्रा

आधुनिक राजस्थांनी कविता सारू बगत-बगत माथै नूं वा-नूं वा मत अर वाद सामी आवता रैया। केई आरोप ई लगाइजता रैया क' आधुनिक राजस्थांनी कविता किणी ई वाद री सबळी ओळखांण नी बण सकी। बस दो रूप ई उभरनै आया अेक तौ मंचीय कविता रौ अर दूजौ अमंचीय मुक्त छंद कविता रौ। यूं छायावाद सूं लेय'र प्रगतिवाद तक रा तमगा ई आधुनिक राजस्थांनी कविता रै सागै बगत-बगत माथै लगाइजता रैया। चायै इणरै लारै केई कारण रैया। पण वे कारण हिन्दी कविता जात्रा सूं न्यारा है। इण वास्तै राजस्थांनी कविता री जमी नै हिन्दी कविता नै ध्यांन में राख'र आंकणी वाजब कोनी। क्यूं क' जिण गैलां सूं हिन्दी कविता गुजरी वां सूं न्यारी हालतां राजस्थांनी कविता री रैयी। आधुनिक राजस्थांनी कविता माथै अेक'र सरसरी तौर सूं ई दिस्टी न्हाकां तौ केई महताऊ बातां सांमी आवै, जिकी क' इचरज करै जैड़ी है। सबसूं पैली अर मोटी बात तौ आ है क' आधुनिक राजस्थांनी कविता नै हिन्दी कविता जित्ती लम्बी जात्रा कोनी करनी पड़ी। अर अेक लम्बै अंतराळ तांई तौ साव सांयत रैयी। इणरी खास वजै ही राजनीतिक उथळ-पुथळ अर जन चेतना री कमी। अैई कारण रैया क' आधुनिक राजस्थांनी कविता रौ उण बगत सांगोपांग विकास नी होय सकियौ।

अर आधुनिक राजस्थांनी कविता रौ श्री गणेस होयौ कविवर ऊमरदानजी सूं। पण वां री कविता पूरण रूप सूं नी तौ आधुनिक ई

है अर नीं ई ठेठ परंपरावादी ई। यां नै आपा संधिकाळ रा कवि कैय सकां, जिका क' भावां अर विचारां रै स्तर माथै तो घणै तेवर रै सार्थ आया, पण छंद अर सिल्प रै मामलै में ठेठ परंपराऊ ई रैगा। नतीजो ओ होयो क' यां री कविता पूरी तरियां सूं आधुनिक नीं वण'र बीज रूप में ई सामी आयी। अर इण रै बाद रा कवि जिका सबसूं सबळै रूप में सामी आया वै हा जनकवि श्री गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' वाकेई आधुनिक राजस्थानी कविता रा पैला सिमरथ अर सदळा कवि है। वां री कविता आज ई आपां नै उत्ती ई 'अपील' करै। इणरै लारै केई कारण है अर वै कारण ई यां नै इण रूप मे थरपै। 'उस्ताद' री सबसूं मोटी विसेसता आ ही क' वै साव सरल अर सीधी-सादी भासा में कविता करी अर गैरी सूं गैरी बातां उणमे कैयी। देस री आजादी, वैग्यानिक विकास अर विस्व राजनीति रै बदळतै रूप री चितण वां नै केई मोहा सूं तोड़िया अर नूंवी चेतना जगाई। आ बात वां री कविता में सुभट सलावै। साथै अर लारै रा कवियां री सिरजण दीठ नै कमती अर बत्तै रूप मे उण नूंवी चेतना नै अंगेजी है।

नूंवी चेतना नै अंगेजण री फळ ओ होयो क' सिणगार अर वीर रस री भावनावां सूं जुड़ियोड़ी राजस्थानी कविता परम्परागत ई नीं रैय'र कदेई नूंवो मोड़ ले लियो। अर इण नूंवै मोड मे राजा-महाराजावां जागीदारां अर सरकार री बडाई आपो आप मरगी। इण वगत सूं बडाई रा बंधण टूटग्या अर झुकाव व्यवस्था अर समाज सूं सीधो जुड़ग्यो, इणी सार्थ काव्य जात्रा में आसा-निरासा रा मान टूटण लाग्या बठैई कविता जीवण सूं जुड़ण लागी अर मुक्त छंद पसरण लाग्यो। अबै धीमै-धीमै कळपनावां में गमण अर पलकां में रमण री लाळच आपो आप बंद हुयग्यो। इणी प्रभाव सूं बदळतै परिवेस मे समाज अर व्यवस्था री जबरदस्त लड़ाई सामी आय रैयी है। जिणमें जन-जन री पीड़ है, इन्याव अर जोर जुलम सूं सीधी टक्कर है, उछाळो है, अर आज आधुनिक लोक जीवण रै रग-रग में आ कविता रमती लागै। यानै क' कविता जथारथ सूं जुड़गी है। आज कविता मे गांवां अर सहरा री संस्कृति रै रावणै रै मार्ग तीखी पण ई है, वठैई खारी पण है। तो कठैई मुधरा आखरां में मामली मीठी अर कोजी मार लागै लिखारा इन्याव सूं वाथेड़ो कर रैया है। नौकरसाही नै आडै हाथां लेय रैया है। पाठकां रै भावां विचारां अर दुख दरदा नै परोटण लाग्या है। अर परम्परावादी मानसिक कुठावां ई आपो आप मिटगी है।

इण साहित सिरजण में नूंवो उपमावां, नूंवा विसै अर नूंवै प्रयोगां रै सागै-सागै बदळतै नूंवै परिवेस री तड़प है। अबै आ बात कोनीं क' इण सिरजण नैं लेय'र जग हंसाई होवै। सगळाई सिरजक आप-आपरी सूझ-बूझ मुजब नूंवी दीठ रै सागै सिरजण कर रैया है, जिणां री कवितावा में मजूरां, करसा, आदिवासी, अछूत इत्याद निचला वरगां रो संघर्स है, सागै ई आप-आपरै असवाड़ै-पसवाड़ै रै मानखै अर समाज री हूंसी-खुसी दुख-दरद,आसावां बदळती मानतावा अर बदळतै जुग रा सांगोपांग चितराम जण-माणस में रम रैया है। अर लिखारा आज आपरी भूमिका बरोबर निभाया जा रैया है।

'उस्ताद' अर बाद रै कवियां रो लेखो जोखो करा तौ लागै क' लारलै 40 बरसा सूं आधुनिक राजस्थानी कविता रै सिरजण में केई कवि जूझ रैया है अर आठवें दसक ताईं पूग'र इण संघै रा सगळा कवियां री आं कवितावा माथै अेक आलोचणा री दीठ न्हाकां अर परख करां तौ पगस लियां बिगर ई कैय सका क' राजस्थानी री आधुनिक कविता बीजी भारतीय भासावां सूं किणी रूप में उणी लारै कोनी जितरी क' कैयो जा रैयो है।

राजस्थानी पत्रिकावा-मरवाणी, ओळमो, जलम भोम, मधुमती परम्परा (हेमाणी अंक) अर राजस्थळी इत्याद रा कविता विसेसांकां री लम्बी जात्रा करण रै पछै आगै अठै ताईं पूगतां लखावै क' अबै आ री कवितावा रा पसवाड़ा सैंठा है अर अै आपो आप आपरी सबळी ओळखाण बणावण में सिमरथ है। आज राजस्थानी री आधुनिक कविता में कविताई प्रयोग दूजी भासावां सूं असरदार अर सिरै मौड लखावण लाग्या है, अर रचनाकारा री सिरजणाऊ दीठ में परंपरावा सूं हट'र नूंवै प्रयोगां अर प्रसंगा में बदळतै परिवेस री सबळी पतराव सामी आय रैयो है। पण आ बात आलोचकां अर अनुवादकां री कमी रै कारण सामी नी आय रैयी है 'जद क' हिन्दी अर दूजी भारतीय भासावा में औ कारज आंदोलण रै रूप में होय रैयो है। भासा नै संवैधानिक मानता न मिलणो बी इण में अेक मोटो कारण है। इतरो होवण रै पछै बी आठवें दसक रैंछे लै लागै क' अनुवाद अर आलोचणा री खांमी ई पूरी होय रैयी है अर नूंवी दीठ लियां आलोचक अर कवि इण आंदोलण सूं जुड़ता जा रैया है। अबै आसा बंधै क' औ काव्य सिरजण आधुनिक राजस्थानी कविता री विकास जात्रा रो सैंठो आधार बणसी। इण सूं वेसी बात आधुनिक राजस्थानी कवितावां भाग-दो में लिखस्यूं।

राजस्थान दिवस, 1983

□ मीठेश निरमोही

आधुनिक राजस्थांनी कवितावां भाग-अेक रा प्रतिनिधि कवि

विगत :

फारगाल

सत्येन जोसी

रैंतां-रैंतां व्हेग्या म्हा-पोस्ती
सैतां-सैतां भूल गया-
घावां री कुळण
जीवण री मरम
ठडै वायरियै री सौरम में
रमग्या सैं जोव—
माटी
भाटा
भाखर
लेवां हां वाफारा
डागळियो छड़क-छड़क
लुळ लुळ नै सेवां हां
थगर-धूप
धाप्यां रै
लोई रा पांणी कर
पीवां हां बूंकां भर
नैणां री जोतां में
पोवां चितरांम अजूं
भर-पर में भंवियोड़ा
ठीकरियां जीतां हां, हारां हां ठीकरियां
नारां सूं घटियोड़ी
श्रोखद नै चाट-चाट
चावां हां, चवड़ा हां...
चावां हां...
गूंगा बण
गाफल री सांग करां
दूजां री गत जीवां
दूजां री मौत मरां

—आधुनिक राजस्थानी कविताः

घालां हां दो ग्रांगळ
मांडां हां कोस चार
सांमो कद ग्रांवरण दां,
खुदनै, खुदरै म्हां
जाणां हां पोल-संग
गावां में नागा हां,
ना ...गा कर नागाई
सांवट नै मेल-भूल
भूल गया....भूलां हा....भूलांला
भूल्यां ई पार पड़ै
ऊब ताळ लोटं में
चिवको कुण मार सकै ?

गुचळकी डुवावंला
गुचळकी पुगावंला
सुरगां रै दुरवाजै
ग्रोसीस्या ग्रधर पड़्या
सुपनां रा धेसा दो
जीवतड़ां रा सुपनां
मरियोड़ां रा सुपनां
सुपनां ई जीवण है
सुपनां ई मिरतू है
करमठोक कमतर में
हाडकियां भांग रया
भागतड़ जीवण री
जनपतरी फाड़-फाड़
मिरतू रा हलकारा
टसकै है ! टसकै है !

फेर अेक पसवाड़ो
ग्रटक्योड़ो उळझ रयो
गीतां री कड़ियां में
ग्राखर व्है ऊड़घूड़

ग्रावै कुण
गावै कुण

भाड़ रा भाड़ूता
पड़ भागा
पड़तो जा
सड़तो जा
सुपनां ई चरतो जा
सुळग-सुळग घुटतो जा
नैचो कर, नैचो कर
खांप्यां रे जेज कठै
लैड़ो समसाण जांण
भाग मती पाळो यूं !

पिंडत री नेग हाल
देणो है आंत काट,
घर नै तो देणी हैं ढूंढेरी
ओपमा

खेतां नै लाटण री
परवाणो लिखणो है
बळद्यां री रास
हमैं उण खूंट बंधणी है
सांसांरी फारगती
बाइयां में करणी है
हाल कठै मिरतू री मिजमांनी
करण जोग
देख हाल सूरज खुद मांदो है

मांदो पड़
रिब-रिब नै टसका कर,
दूस्या भर,
आळस नैं फगत अेक
छतरी वींसायंत दे ।

बीज

— पारस अरोड़ा

अठै इज
    इण जमीं मायं
    खड़ै वौ खेत
    वोवै बीज
    कैसी चीज औ दांणौ !

सूखौ
    चाटलै के बाढ़ दै वैवाय
    कुण जांणै
जरा लौ देख
    नैड़ा आय

अर आंख्यां जमा इण हाथ
कैसी चीज है जांणौ।

घणी ई मुस्किलां सूं
मैणती हाथां म लण व्हेणौ
सिनानां सोरमो आली जमीं री
कूख में पड़णौ
किरण ज्यूं फूटणौ
अर फूलणौ
अर फैलतां जांणौ

पकड़ पवन आंगळी
सुर-लैरी ताळ देय
लय में ढळ जांणौ
सावड़िये पुस्ट व्हेय
सिक-सिकनै पाकणौ
टाबरिया छोड भूल
इणनै औलाद मान
पस्ट पौर इणरी अंवेर रात जागणौ।
काट-कूट-झपट-छांण
चमक रंग देवणौ लो देख!
अठै इज इण जमीं माथै!

अठै इज इण जमीं माथै
औ भुगतै कैद
वो काटै सजा
बंधक बण्योड़ो है
थै वै हाथ हो
जे रोप दी इण बीज नै थै आज

काले वा फसल व्हैला'क
थांरा काट दे सैं जाळ।
औ है बीज, थै हो हाथ
थांरी जो रैयो है बाट, लो आवौ
अठै इज, इण जमीं माथै।

इग्यारा कवितावां

● ओंकार श्री

1

रंजी री बीज
ग्रह्य मरजाद
मनै अर तनै
चावै श्रोर कांई ?

2

छप्पनियो छींको
टूट्यो कोनीं
कागजां नै फींको
सुणों होनीं !

3

तखत बिछाग्रो
तखता ऊंचाग्रो
तखतमलजी !
अठी नैं तो आग्रो !

4

ग्रणु/ईस्वर
स्वर
साक्षर संग निरक्षर !

5

क्रान्ति री डफोळ संख
राज अर ग्रकाज !

6

जमानो
ठोठ रोकड़ियो
जलम-मरण रो !

अे·खातो जीव
जगत रा सफा खोटा है !

7

पढ़ए नै हड़मांन चाळीसौ
सुएन नै भागोत
लिखए नै
रपट थांएँ री
छपए नै
जागती-जोत !

8

ऊमर रै खेजड़
पर
सांसां रौ टंग्यौ है
रीतौ पाळसियौ
उडै तिसाया प्राण-पंखेरू !

9

थोटियौ नारेळ
वाजै है
च्यारूं मेर
संसद सूं सड़क तांई
भाजै है !

10

राधा
अहिल्या
द्रोपदी
अेकद सदी ? तन्नै !
बोल (म्हारी) गूंगी सदी ?

11

स्वागतम्
पधारौ सा !
अलविदा
पधारौ सा !!

टावर रौ सुभाव

नंद भारद्वाज

अबखा अर अबोट सवालां में
अणजांणे हाथ घालणौ
टावर री आदत व्है—
आगूंच वो अंदाजै कोनीं
अबलाई री अंत—
अर थाग लेवण
ऊतरतौ जावै अंधारी बावड़ियां !

टावर रा
वां तीखा सवालां रौ
वो कांई पड़ूत्तर देवै
जिका-आभा-चूक
हलक सूं बारै आय
ऊभ जावै सांमी
अर हालात सूं
बायेड़ो करण नै मजबूर करै—

जीसा !
आपां क्यूं जोवां कोई रै सांमी,
क्यूं चाईजै आपांनै कोईरी मेहरबांणी,
क्यूं ऊभणो पड़ै अकारथ
राजमारग रै अेड़ै-छेड़ै,
बोलां क्यूं अणूंती जै-जैकार—
अर क्यूं अबोला बैठणो पड़ै
आपांनै मरजी परवारै ?
केड़ी अणचींती दुविधा है;
अेकांनी टावर री अलेखूं भोळी इंछावां
स्यांणी संकावां—

अलखू कवळा सपना
अर बापरती काची नींद,
अर दूजी कांनी
आ कुजबरी परवसता री पीड़–
उणरी आंख्यां सांमी घूमै
टावर री इंछावां
अर सालता सवालां सूं
जूंझै उणरी मन,
सेवट धूजता पग
चाल पड़ै मत्तै ई उण गेलै
जिकी अेक अंतहीण जंगळ में
गम जावै,
कानां में गूंजती रैवै
फगत टावर री डूबती हाको–
—थे यूं असामणा कठीनै जावौ जीसा !
दोफारां आपांनै सैर जावणौ है–
म्हनै आजादी री परेड में हिस्सौ लेवणौ है,
थे यूं अबोला कठीनै जावौ जीसा ?

मरजी रा मालक

आ मानी के डील आपरी है
आपरी डेरौ है
हलकै रा हाकम आप–
आप मरजी रा मालक है !
आप चावै तौ भंवता फिरै
आभै री अवखाया में
कांठळ मे मिळता भुरजा सूं
आंकस राखै,
मंणी देवता फिरै बगत रा बायरां नै
पांणी आडी पाळ बांध
निरभै सोवण री सांग रचावै !
जुगती सूं जोड़ै हाथ
हथाळघां मांय

ऊभ-घड़ी आंवा ऊगावै
बाळपणो बिलमावण खातर
जैर घुळियोड़ी वांणी सूं
हालरिया गावै,
फांफां खावता फिरै
मिनख ऊजड़-उरभांणा–
अै सांमी जोवै
मुळकै–
अर फीटा पड़ जावै !

भारी बंदोवस्त
जावतो व्हेतां सांतर
इचरज व्हे आंनै उठती आवाजां माथै
'समझहीण' लोगां सूं सेवट गैळ छुडावण
सबद उधारा मांग
दिलासां री डौढी चढ जावै !

गरज व्हियां
चालै उप्पाळा-उरभांणा अै
अपणायत दरसावै डोढी
पगडांडयां सूं मेळ वधावै,
बात उगेरै आदरसां री ऊभ-घड़ी
करसै रै कांधै हाथ राख
फोटू खिचवावै !

सरणाटै में ढळग्यौ तीजौ पौर
सईको तीजी पांत उतरग्यौ
पड़गो मोळी अंधारै री मार
वायरा ओजूं चालै
ऊगूणै आभै में उठती लाय
पखेरू निरभै निरखै,
धोरां रै उपराखर उठती आंधी
काटकती वीजळियां री गाज
गढां री नींवां धूजै–
पण ओजूं करड़ावण बाकी है
आतमघाती वगत सिरकतौ आवै नैड़ौ
पोत उघड़्या च्यारूं कांनी

—पण ग्रोजूं लग सांवण बाकी है !
—ग्रो ढोल ग्रापरो है
ग्रापरो डेरो है
इलकै रा हाकम ग्राप—
ग्राप मरजी रा मालक है !

अणभव रौ सार

उणरी ग्रेक छोटी-सी दुनियां है
कीं जरूरी बातां री
सजती सुळझ्योड़ी पिछांण—
ऊपर ग्राभै में फगत तारा है
जिका सिझ्या ग्रंधारो घिरियां ऊगै
व्है जावै ग्रदीठ
—कुदरत री धारो है !

ग्रास दिन रातां जिणरी ग्रास
वै सपनां री घड़ियां में सांमी ग्रा जावै
ग्रर ग्रांख रै उघड़ियां
दीसै वै ई खाली हाथ—
वौ ई ग्रडोळौ सूनो ग्रांगणौ !

कैवत री मैमा है :
मिनख री पिरथी माथै जीवणौ
मालक री मरजी रौ परसाद—
देव री इंछा परवारै कांई कर लै ग्रादमी ?
नीं उणनै बडबोली कैवत सूं इतराज
नीं खुद री मन-मरजी ई साजणी,
इंछा फगत इत्ती-सी है—
जिनगांणी सोरै-सांस जी लेवै
मिनखां में वणियोड़ी रैवै लाज—
घर-बैठां गंगाजी न्हावण व्है जावै !

ग्रै ब्यारू मेर बीगड़ता ग्रासार
बेकाबू हालात सांमी
कांई कर लै ग्रादमी ?
जलम सूं लेय'र ग्रोजूं तांई

जिको-कीं जांण्यौ-वूझ्यौ
उणरौ अणभव सूं उल्टौ ढाळौ है–
वणाया जिणनै मोवी आगीवांण
सरायौ भाग
दीखता कारज वांरा उत्ता ई पोचा है,
मोकळा नेम बतावणहार
ऊजळा संत
खुद री नीयत रै समचै
उतरता उत्ता ई ओछा
–इण जुग री आ लाचारी है !

यूं वरसां रै अणभव रौ
अंतौ सार
वौ इणी नतीजै पूग्यौ दुनियादार :
भाग रौ भरम
फगत आपै रौ स्हारौ है,
मन नै धीजावण सारू
माईता री सूंपियोड़ी सीख
अेक भोळौ विसवास
सुख री कामना !

आंगै ढळियोड़ौ
मीठौ मानवी वैवार
अंतस में दवियोड़ी ऊंडी वेदना !

मिनख रौ भाग
मुलक सूं न्यारौ कोनी व्है
नी सरीखा रैवै हरमेस
दोजखी रा दिन
जिका उतारै पिरथी रौ भार
वै आभै सूं कोनीं अवतरै
नी जमी नै फोड़ ऊगै
सिरजण हार–
वै हेत राखै हाथ सूं
जमी सूं वंधियोड़ी राखै आस
मैणत नै ऊंचो माण देवै मरदमी !

करसौ-अेक

● मोहेश निरमोही

गाडां में भर-भर
धमू भता सुपनां
वणावै अदीठ हवेल्यां
फाटोड़ो अंगरखी रै पांण
छाती तांण
करतो रै जेठ री लूयां सूं वाथेड़ो
मूळ सूं डाळ पांवण री
लगायोड़ी आस
वारू मारा !

सोळै आनां साची वो
सांची वै हवेल्यां
अर
पराई पीड़ सींवतो
हवेल्यां री भरम
रिनरोही में भंवतै मिरगलै री भांत
जुग-जूण जीवण
पीवण पराई पीड़
ऊंचावतो लांठाई रा लटका
सोधतो छींया
लिखणी चावै नूंवै जुगां रो इतियास

विलमावै खुदनै
पलटतो/वदळतो आपरो उणियारो
वेकळ रेत/हरियल खेत
ऊंडां अबूझ धोरां
पैछाण्यां आंधी अर वधूळां
आपरै अधमरियै मिनखपणै नै ,

अर/बांचतो रेवै जूनै जुगां रो इतियास
अणथक, अणतूट लियां नूंवै इतियास री आस
हांफतो रे! हांफतो रे!! हांफतो रे!!!

करसौ-दो

जोतयां हळ
हांकता बळदां
बीजतो किसमत
रासां रे फणकारा
ऊरतो ऊमरें-ऊमरें
आपरो इतियास।

करसौ-तीन

लूं सूं-
लिपटियोड़ो
बतूळियो
काटतो पेट
करजे रो मारयो
बांटतो तन
उपजाय-उपजाय अणूतो अंन
अंजळ रो अवतार
बांचतो आपरो ऊजळो इतियास।

क्यूं नीं जांणै मांनखौ

तावड़ री तेड़ां
पिगळतो उणरो डील
बतूळियो बण
हिवड़ नै हरसावै
परसेवै रा टपका
इमरत भोग बण
ब्यावलो रचावै
धरती री मांग भरै
निपजावण लागै मोती

आज रौ नीं
नीं जाणै कितरै वरसां रौ
वतावै इतियासू इतियास
क्यूं नीं जांणै मांनखौ ?
क्यूं नीं जांणै मांनखौ ??

न्याव

गूंगो-वोळो
आंधो वण
वदळग्यो-
'थू'
ठावो/थारो
मुलकां चावो नांव
न्याव !
अर
अटकण लाग्यो
'थू'
थारै ई दरूजां
जाणै रिनरोही में दौड़तौ-
मिरगलो किस्तूरी री दौड़ !

नित-नेम

हरीश भादानी

थारो-म्हारो नित-नेम
आ भळै वाथेड़ा करां !

खायली आंधी
पीयली लूआं
पूंछलै मूंडै लाग्योड़ो झूठ
रगड़ हथाळचां
झाड़लै चैरै चेंटोड्या
काळा-पीळा लेवड़ा
थारो-म्हारो नित-नेम
आ भळै वाथेड़ा करां !

बीज्योड़ी बाजरी
मतीरां, मोठां नै
लापो देग्यो काळ
आ, तूरलां
जाळ क' खेजड़ी रो डील
छाल नै कूट
पीयलां टिक्कड़
सिजोयलां सिणियो
बांधा, बंधै जियांई बांधा–
पेट रै पाटी
थारो-म्हारो नित-नेम
आ भळै वाथेड़ा करां !

आव चालां
राज रै मोटै थांन
बणां तमोळा-मेड्यां

अकासी माळिया वर्णे
चाल आपां अडांण बणां
माथै ईंटां-चूनै रौ भारौ
नीचै चींथीजी जूंण ढोवां
थारौ-म्हारौ नित-नेम
आ भळै बाथेड़ा करां !

थारै-म्हारै
दुखां सूं दूबळा दाता
पगोथियां सांटता चढै रांस
रांस सूं बांचै
थारै-म्हारै खातर
विधि-विधान
नांख
वातां रै ठंडै भोभर माथै
नांखदै धोवा-धोवा धूड़
थारौ-म्हारौ नित-नेम
आ भळै बाथेड़ा करां !!

म्हारी हेमाणी जूंण

म्हूं....कांई कोरी डूंगर
झाल्बोड़ी ऊभी
खेजड़ौ....जाळ.... क' आक
क' तळै चेंटोड्यो सिणियौ,
तूंबै री बेल ?
म्हारौ उघाड़ौ
पळपळती हेमांणी काळजौ देखतांई
सूरज री लाडेसर किरतां
उतरै करै रमझोळ....

आळगै
सूं देखै काच
कंवता जावै
बो रंयो पांणी रौ छळावौ ...
पांणी कठै है अठै
चौखूंट पड़ियौ है

सूकौ सून्याड़
वरसां-वरसां
वादळ री लीरी तक रौ नीं पासंग

साची
काच री देखी कैयो
पण दीठ नै दीसै
सूकै सरणाट में
जागतौ बैठौ
तावड़ियौ साच
क' वादळ रै बसू नीं रैयौ

म्हारी जूंण
देखतौ भ्रायौ है सूरज वाप
हारा, हां म्हारा कमतर
धर मजलां धर कूंचां
दनूंगै-सिझ्या
ना पूगै पत्ताळ
भरलै वोरै में
खळ-खळ नांखदै देगां में

भ्राडा भ्रायोड़ा काच
उतारै दीठ
म्हारै पणीढै
कांसीरी थाळी
म्हारी भ्रांख्यां में हिलकतौ दीसै
नीलम भ्राभौ
भ्राभै पसरयोड़ी हरियल वेलां
वेलां में पांणी
पांणी सूं तिरिया-मिरिया
म्हारी हेमांणो जूंण !

सहीद री व्यथा

— फारूक आफरीदी

च्यारूं मेर नाचता-भागता-फिरता
मिनख-ई-मिनख
चौराया माथै ऊभी सहीद री मूरत
सोधै मानखां में मिनखपणौ
पण दीसै कोरी भागम-भाग
कोई रोटी सारू
कोई गोटी सारू
कोई बोटी सारू
मूरत री आतमा दौड़ै वांरै लारै

सहीद रो मन रोवै आपो-आप
कांई सोच'र सहीद व्हियो ?
इण मूरत खातर ?
टाबरां रै दांणां-पांणी खातर ?
अमर होवण ?
नीं ! नीं !
मुलक री मुळकाई खातर !
तौ पछै आ दुरगत ?
सहीद री मिरतू दुरगत खातर ई व्है,कांई ?

म्हनै भुगत करी
कुत्ता रै मूत सूं
कबूतर री बीटां सूं
म्हारी छाती माथै
रंग-रंगीली टोप्यां रा पोस्टर
चोर ज्यूं चौकीदार री रूखाली क्यूं
जुआरियां री रमझौल क्यूं

तुरत तोड़ौ म्हारी मूरत
बंद करौ म्हारौ बौपार

मूरत मांडरण री चाव पाळौ
तौ ऊभी करौ
'हैवानियत' री मूरत
पैरावौ फूल पोनड़ा
नित-नेम
पछै काटौ च्यारूं मेर चकरा
चढावौ रग-रंग रौ रगत
मुगत करौ म्हारी आतमा
पोत दौ डंमर अेड़ी हरेक मूरत माथै

म्हारी कविता

म्हारी कविता
मारग ढूंढ रैयी है उण रौ
कठै है वौ
जिण खनै गिरवी राख्योड़ी है
ईमान री पोटळी

म्हारी कविता
जूझ रैयी है उण सूं
जकौ वौपारी है
मिनख रै रगत रौ
वगत रौ

म्हारी कविता
रोक रैयी है वै पगल्या
जका 'जनून' सूं भरयोड़ा है
घिसर रैयी है
रतौंदी रै मांदां नै

म्हारी कविता
कोरी पगडंडियां कोनीं
जठै जकौ आवै, गुजर जावै
अठै सूं वौ ई गुजर सकै
जकौ धरती सूं जुड़योड़ौ है

म्हारी कविता
कुदरत रै न्याव
अर कूड़ा मानखां रै इन्याव
दोनां सूं
दो-दो हाथ करणी चावै है

म्हारी कविता आज
सूरज रो चांदणो
अर रात रो अंधारो
दोनां रै बीच
अंतस रो उजास सोधै है

मरुथळ री माटी

मरुथळ री माटी लू माथै ई
मज कर सकै
अर गुमेज कर सकै
मिनख रै मिनखपणै माथै
रगत रै मोल माथै
आ रै मरजाद माथै

आये साल काळ सूं जूझै
काळ सूं वत्तो
काळ रा जंजाळ सूं जूझै
जूझै वांसूं
जका काळ रा हेताळू है
अर हेताळू है काळ रो पइसो

मरुथळ !
कंवै अठै पांणी कोनीं
म्हैं केवूं कंवणियां में दीठ कोनी
पाणी माटी में कोनी, मोटयारां में है
कंवै अठै रेत है
रेत थांनै दीसै अै हेत रा समंदर है

परकोटा

— अर्जुनदेव चारण

थे ई भळै पूजीजता हा
थांनै ई कोई पूछतो हो
भई मांनणी नीं आवै
कांई हो थांरै कनै

ऊंचै भाखर
ऊभा रैवता
निरखता आवता-जावता मिनख
बस
आय बैठता-उडता पंखेरू
उणारो मोद है
किणनै फुरसत अठै
दूजै कांनीं जोवण री
सगळा दोड़ै है सोधण नै
अेक रूंख
अेक चिड़ी
अेक आंख
जीतण मारू जुद्ध

थे तौ जणियोड़ा हौ
भाखर जड़ियोड़ा हौ
ठौड़-ठौड़ सूं भाग गिया
लोई करड़ांण
आय गिया मूसांक जी
म्है परकोटा हां
हां
हां म्हैं परकोटा हां
जुगां-जुगां सूं

देवता ग्राया थावस
थांरी पीढियां नै

म्हारै पांण ई
करी ही छेलायां थे
कराया पोखाळो
म्हारै डील रो
ग्राज नटी हो
थांरै वास्तै म्हैं जूंझिया
म्हारै हाथां
थे मेंहदी नीं लगाई
मुळकता भेल्या वार
टाळण सांरू विघन
थांरै वाळपणै रा

कूकिया हा बेढाळै
फेरतां पसवाड़ो
भूल गिया
कोनी घडीजिया ग्रजै पूरा
बगत री धार
तपतो सूरज
चढती ग्रांधी
म्हैं भेली
ऊभा रह्या
उफणतो मेह
उकळती जमीन
म्हैं ढावी
ऊभा राह्य

नींवां भरीजी उण दिन ई
जांण लियो हो
अेक दिन टूटणो है
म्है तो ऊभा ई इण सांरू
क' बिखर जावां
खुद कोई कोनी तूटै
बगत तोड़ दै
सगळां नै

म्हांरा घाव देख
हसो मती
काळै
थानै
अठै ई ऊभणो है

कांमणी

नीचलै पागोटै ऊभो म्हैं
म्हनै ओळवा री दाभ मत दै कांमणी
ताच-ताच रा घर
ताच ताच रा आंगणा
छीणां सूं ऊपर है आभो
लुण जांणै
छीणां रै ऊपर व्है कांई
कुण रैवै
मूंन धार
थूं छात वणी
म्हैं आंगणो

अधारो चापळतो आवै
छिप जावै किरण खूंणां-खांचरै
सोधू म्हैं
वायरियो हांकरतो आवै
पसरै लेय भु जावां पूरी
भोगै थूं
म्है सोधू-थू भागै
म्हनै ओलवा री दाभ मत दै कांमणी

विडो री मरजाद जांणती थूं ऊभी
विडो री ओकात जांणती थूं ऊभी
म्है थारी ओकात
पगां वायरो
साव निपूतो
आगत रो सराप ओढियां
नेधम सूतो

लेय कटारो इमरत रो

थूं चंवै
बीजळी खींवै
थूं म्हारी उणियार
डागळै ऊभी
नूंवो घड़त रा सपनां लेय पसरगी
छात आंगणो बणगी
म्है थारो रूपाव
कांमणी
म्हनै श्रोळवा री दाभ मत दै ।

माखी

चासणी मांय पड़ी माखी
कळोजै
निकलण री आस
जूं झती जूं ण
ठ्है जावै थिर
कड़ाई सांरू माखी
रेडियौ सांरू विग्यापन ।

बटाऊ

मारग नै ऊंचायां
कद तांई फिरी बटाऊ
देख
आपरा लोईझांण पग
सोध जमीन
जमीन मारग ऊंचाय लै'ई
पीयजा आभो
उतरजा गैरी घाटियां
गमजा ।

गुठियो राजा

श्यामसुन्दर भारती

सूरज–
डूबग्यो काळीधार
दिन रै अंधारै में
अर इतको आसंग कोनीं म्हारै में
के उण नै वारै काढ लूं

क्यूं के म्हारा हाथ-
म्हांरो आंतां में अळूझियोड़ा है
पण कळोजियोड़ा है कादा में
अर माथो दबियोड़ो है-
कुड़सी रा पागां हेटै
पछै आ काळस कुण मेटै ?
कुण भगावै अंधारा रो भूत
कुण कीलै फुंफकारा मारती नागण रो मुंडो
कुण धरै जूत ?

यूं·
सगळा जाणै-
अर आछी तरै पिछांणै
के जनानी ड्योढी माथै-
नाजरियां रा पोरा लागै है
पण काथो पियोड़ा नै
ताळी रा तटका कद दोरा लागै है।

तो-
भूवाजी फिरग्या है चारूं खूंट
परवारगी है सगळी रांमत
अबै—
के हाकण भलां ई छुरी मलावतो व्हो
गुठियो राजा तो जागै है।

तसवीर

निरखौ
परखौ
नै ओळखौ-
किण री है आ तस्वीर

व्है सकै-
के अं नैंण किणी वगत
मिरगली रा नैणां वरगा मोवणा
घणा अचपळा
इमरत रा प्याला हा
पण आज तो-
दो ठीडा है, माळा है
व्है सकै-
के ओ हाथ किणी वगत
पोयण वरगां रूपाळा
मखमल जिसा मुलायम रैया व्है
पण आज तो-
आयठण है, छाळा है

व्है सकै-
के अं पग किणी वगत
मायड़ री गोदी
फूलां री सेजां हा
पण आज तो-
उरभाणा है, पाळा है

व्है सकै-
के ओ पेट किणी वगत
लाम्बी डकारां लेवतो
धापियोड़ो घणो रैयो व्है
पण आज तो-
आळा में आळा है

तो आवो-
देखो, निरखौ

परखो
ने ओळखो
के किए री है आ तस्वीर

अर सोचो-
किंया बिगड़ी आ तस्वीर !
कुणं बिगाड़ी आ तसवीर ! !
ओळखो-
पिछांणो आप री खिमता
ने समझो-
के जठां तक छाती रा पुड़ियां हेटै
भट्टी धुकै है-
थां लाय लगा सको

बारूद रै तो-
अेक चिणगारी घणी व्हे ।

इण गांव मांय

चंद्रप्रकास देवल

जड़ाजूड़ आपाधापी रै इण
जमारा मांय
म्हारै गांव रौ संकरियौ ई
जांणण लागग्यौ
लरड़ी सूं लेय' र मिनख नै लौड़णौ
जद नीं देख्यौ उण बारणौ ई
इस्कूल रौ
कदै ई नी सुण्यौ नांव किणी सास्तर रौ

इतौ परवारग्यौ है वगत
क' सुभट दिसै
न्यारा-न्यारा खेड़ां मांय वंटियोड़ौ
गांव रौ भूगोल
अर अेकोअेक भागळ मांय चालतौ
सिलसिलौ न्यारौ-न्यारौ जात रौ ।

इण गुणाड़ी, उण फळसै
सगळा लोग, गो री जात
चिपकियोड़ा बैठा है
वां री वां वातां सूं
मन व्है जित्ता फंफेड़ौ
खेचौ-तांणौ
हूचकौ ई नीं खावै ।

चोमासा में अणूंता सांगणां
चारा ज्यूं ऊगै
ये परजीवी, फगतजीवी
रसदजीवी, रगतजीवी

सगळा जीवता जीव
अेक दूजा रो अर आपो आप रौ
भख लेय
न्यारा-न्यारा तेवारां रै हरख-उछाव
नाचै कूदै-खावै गावै
आपरा दाणां कमावै
जूंण भुगत मसाणां समावै
कोई आंनै पकड़ाय गियौ हौ

जात रौ पूंछड़ौ
धरम पुन रौ पग
कोई दै दियौ हौ मंतर आने
क' जात गंगा है
अर गांव राम है
उण दिन सूं आज दिन लग
गांव रा न्याव सूं मरै
अर जात गंगा सूं मरै

रूंख

म्हैं रूंख सूं पूछ्यौ
उणरै डाळां रौ बोझ
उण फगत
फर-फर आपरा पान बजाया
जांणै म्हारै सवाल माथै हसतो व्है

म्हैं जड़ां सूं पूछ्यौ
वांनै आवता जोर रौ म्यानौ
म्हारी बात रै कांनौ नी देय
जोर सूं जमी नै पकड़ी तांतां सूं
जांणै वै वांरी आंगळिया व्है
अर लांबी सांस रै मिस
जमी सूं संदवाय खैंचती रौ

खैंचती ई रौ
पड़ तर साह म्हारा सवाल
वठै रा वठै डाळा सूं लटक्या रह्या

अर वायरां सागै
नाचण लागो रूंख
कत्थक नाचती किणी लुगाई दाकळ।

उणरी न्यारी मुद्रावां अरथावतां
निकळग्यो म्हारी जीभ रो अंस
म्हैं सगळी पोथ्यां अर
अेकोअेक मिनख रै मूंडै सूं
भेळी कर नकामी भासा
खूंजा ताळकै करयां पाछै
पगां री आंगळियां र अंगूठा
जमीं में रोप

आभा नीचै हाथ पसार
जीवता अड़वा ज्यूं ऊभग्यो,
अर पगां पीदै भाळवो करयो इण इंछा सूं क'
म्हारै ई जड़ा फूटै
पगां तांतां छूटै

आदिवासी राजस्थानी तीन कवितावां

दल्ली नी टाड़

ज्योति पुञ्ज

हेत्ताअे देस ना
गरीबं ना परेवा थकी
बणावेला बम भडाका
दल्ली में फोड़ो

ने बोलो-
"अमारू भारत गरीबं थकी बण्यु
अेक धनवान देस है
जोवो त' जोईलो

दल्ली केवी समकै
हेत्ताअे देस मे आवीस्
सकमक समकती
ऊजवारी विरजीअे
ने ऊंसी-ऊंसी पांस पांस तारा वारी
होटलें ने बंगला है

कड़कती टाड़ में
पूटा थापडा
ने आकोडिया ना भडलें नी भेतें
टाड़ाई गयी है

ने अेणा टाल्ला अमें
टाड़ायलो रूपो आपड़ी वडरी नै
कै/के "वेट्टी दल्ली केवी अुहे
कारेक जुवो पड़ें
अें टाड़ नै पड़तो अुहे के हूं ?

वाटलौ

अडुक मडुक नै
खाटी सा
घी आवै ने साटी खा
पण
अवैतौ खाटी सा नांस् वांदा है
तौ घी क्यं हूं आवै
नै क्यं हूं साटै ?
ससार साटवा मजें स है
सब जे मल्यु साटी खाई जजें
पण
काले हॉंजं
रामा भावा नौ सुरो हूको
काल नौ वाटला ऊपर जम्यौ
धूरौ साटं
ने साटतं-साटतं भूख उगडी आवी
त' अेनी कानी कापी खाईग्यौ
ने रामौ भावौ
हूका नं कूटं ने सेठ संकर नं
काल नो पगार व्याज-व्याज मजें
लईलेवा हारू-मन-मन अजें गारं दजें ।

वापड़ी सम्पा

रूड़ी ने रूपारी
हावू नी वटकी
बोलं त जाणं फूलं भरं
ने दांत काड़तु थकु मुडु
पण्णी नं जई वेरं गाम मजें
आवी साम्पा
त' वीजी वाइयें ना भाव ऊतर्यी
हेत्ता गाम मजें
हेत्तीअं वातं मजें
अेनी वां वाई

बीजी वाइयें मली न
साड़िये करें, अे णीं सीता हरकी
सम्पा नै वातें-वातें मअें
नेसी पाड़वा मककें नै नजरै मअें हूं
उतारवा घणीं तपड़ी
कान भर्या झूटी-झूटी वाता उड़ाड़ी
पण कोणें विस्वा नें करै
ने सम्पा नो भंडो कं सोस् रै
तारै थुड़क दाडें पूटें
अेक वाई धुणें
ने धुणती-धुणती कै/के
मूं डावणी हूं जुणें मारा चक्कर में
आवी जाय अे नै मुं साई जऊं
मारू नाव-'सम्पा' है

ई रातर नै आजनो दाड़ो
वापड़ी-सम्पा डाकणी थई गयी
गाम मअें कुणें नती बुलतु अे नै
हामी पड़ै त' मनकें वेगरें जअें/धुरें नाई जअें
ने धणी कूटै/आम करम फूटै।

बाट

• बी. ग्रार. प्रजापति

इण बिरख री छींयां ऊभौ
बेसवर व्हेतौ
म्हैं-थ्हारी बाट जोवूं हूं !
आंख्यां फाड़-फाड़
ठेट खितिज तांई दीठ पसारू
मन नै बिलमातौ-बिलमातौ
फेर उतावळौ व्हूं
बात कांई व्ही
थूं कठै ई गमग्यौ तौ नीं ?

इणी मारग भागतौ-भागतौ थूं
जोवण नै गयौ हौ
थ्हारा सगळा सपनां
जिका
थ्हांरी गांठड़ी रै तींडै सूं
फिसळता/निळकता
बिखरग्या हा
गांठ खाली व्हैती-व्हैती
ठेड ग्रांख्यां रै ग्राडी ग्रायगी
ग्रर थूं चमक्यौ-ग्रचांण चक
ज्यूं नींद में टाबर चमकै
थ्हारी उतावळी ग्रांगळयां
संभाळै गांठ नैं घड़ी-घड़ी
ज्यूं-ग्रेक मां
नींद सूं ग्राचांण चक चमक ऊठता
ग्रापरा टाबर नै
बाथां भेलती संभाळै
ग्रर डरती-फरती पूछै

कांई व्हियो म्हारा लाल .. कांई दीस्यो ?
वै मूंडा पर
डूबती-तिरती लैरां
संकोजतो, सुकड़ीजतो मन
अदीठ भविस री भैं
अर थूं
पाछो भाग्यो हो
इणी मारग रै अरावाड़ै-पसवाड़ै जोवतो
म्हारा गमियोड़ा सपनां
हांफीजतो-कांपीजतो !

भाई !
मारग पड़ी मोहर कुण छोड़ै
विखरयोड़ा दाणां नै
क्यूं नी चुगै-अै भूखा पंछीड़ा
जद कोई ठगीजै
सापरतै अेक आखर सूं
क्यूं नी ठगै वांनै
अै-कोरा कूड़ सवदां रा व्योपारी ?
म्हैं थ्हारो हाल पिछांणतो
म्हनै ना कियो हो-
मत भाग वीरा! ...पाछो मत भाग !

गमियोड़ो धन
पाछो घणो दोरो लाधै !
आव भाई !
म्हारै साथै आव
आपां दूजा सपनां घड़ां
सांचा व्हैता सपनां
ज्यां मे-टावर नीं दीसै
भूखा, तिरसा अर उघाड़ा
मां
मांय री मांय नीं पिसै
पाळती रिसता, रगवगीजता घांव
भविस
नी व्है- मिरगा री कूड़ तिसणा !

परा
हांफळियोड़ो थू
चेता-चूक व्हियोड़ो मू
थ्हनै धीजो नीं हो
अर थूं भाग्यो गयो पाछो
जोवतो, उतावळो
इणी मारग रै असवाड़ै-पसवाड़
थ्हारा गमियोड़ा-सपनां
अबै खासी देर व्हेगी है
हेतो जावै है
म्हारो मन भी व्है उतावळो !

इण बिरख री छींयां ऊभो
बेसबर व्हेतो म्है
थ्हारी वाट जावूं हूं
ठेट खितिज तांईं दीठ पसारतो
फेर उतावळो व्हूं
वात कांईं व्ही
थूं
कठैई गमग्यो तो नी ?

कांईं करूं ?

म्हैं कांईं करूं ?
या तो केजुअल छुट्टी लेयलूं
अर रजाई ओढ'र सोचूं-
क्यूं सड़क रै अेकांनो या फुटपाथ ऊपर
मरयोड़ो पड़यो हो तो मिनख-
ठंड सूं ठरियोड़ो ?
म्हैं कांईं करूं ?
म्हारै बैंक रै
अंडर ग्राउंड' लाकर वाळा
'स्ट्रांग-रूम में जाय'र लुक जांऊ
अर सोचूं-
क्यूं व्हियो आज

सड़कां ऊपर लाठी-चार्ज/क्यूं चाली गोळियां
हड़ताळी मजूरां अर
स्कूल-कालेज रै टावर-छोरां ऊपर
इण तरै लोथां ऊपर लोथां विछणी
चोखी कोनीं !

म्है कांई करूं ?
क्लब री मीटिंग मे आज
म्है जरूर कैवूंला जोरदार सुर में-
भायां दो लंबर री रकम रो
बजट वधाग्रो
अर वाटो सस्ता कांवळ-खांणो-पीणो
सगळा गरीवां नै !
यूं नीं मरणा चाहीजै मिनख
फुटपाथां ऊपर ।
म्हैं जरूर कैवूंला-म्हारा भायां !
मजूरां रो महगाई भत्तो वधणो
स्कूलां-कालेजां में
किताबां अर कामिक्स वांटणा
घणा जरूरी है ।

यूं आयै दिन
हड़ताळां नी व्हैणी चाहीजै
देस रो भलो
यां चीजां सूं नी व्हेय सकै !
म्है कांई करूं ?
देस रो भलो कियां व्हेय सकै ?
आखी रात म्है
सोचूं, जागूं सोचूं
देस रा दुख सूं
आवटतो-तूटतो,
गरम रजाई में मूंडो ढकतो
मन-ही-मन रोवूं भांभरकै !
मिंदर में जद वाजै भींभा
हड़ताळां-हाका-मौत
सूं डरतो

लेवूं मन ही मन रांम री नांव !
म्हैं कांई करूं ?
छितराव्रं दो-दो हाथ री सूळां री झुंड-
धूजतो
पाछा भेळा करूं
आगै सिरकूं च्यारूं खूंट जोवतो-
'सेळ' जिनावर दांई !
मन री सांचो ग्यांन
कित्तो बेईमांन ?
लारो नीं छोडै म्हारो-
म्है कांई करूं ?

जिन्नगांणी

डा. मदन केवलिया

जगत री आवाज हूं/हमेसा
अेक ईमानदार मिनख दाई सुणी है
पण, म्हनें ईयंरी सजा/हमेसाई भुगतणी पड़ी है
कास/हूं सीख लेवतो
चापलूस चमचां सरीखो नाटकीयता
धरणा लेवतो
नाटक रै पातरां दाई ठाणपूर चैरो
तद इत्तो पिछड़तो नीं
सीटियां बजावतो पूनां सूं इत्तो दूर नीं भागतो
अर ठीमर जिनगांणी जीवतो-

पण ईं लखणां री कमियां
म्हनें कठै रो भी नी राख छोड्यो
अहं नै सरे आम/ नीलाम करण रै बाद भी
हूं आज ठरकेल ज्यूं
पड्यो हूं अेक खुणै मांय-
म्हारै कनै दरद री हिसाब कोनीं
क्यू के सांसां री हिसाब राखणो सोरो कोनी
आपणी बेहिसाब असफळतावां म्हनें
जिनगी रै ऊ अठाण मार्थे लाय ऊभो करयो है
जठै हर कामयाब मिनख
म्हनें/ आपणो दुसमण निजर आवै
अर'अेक ईमानदार मिनख में निजर आवै
म्हनें खुद सरीखै असफळ मिनख रो चितराम।

हूं चावूं हूं के अबै हूं
सराफत अर ईमानदारी जिसै गुनावां सूं
दूर हटनैं, अेक चोखै मिनख जियां
जिनगांणी रा बाकी दिन गुजार दूं।

लाचारी

सुद्धि पत्र सी ठरकेल जिनगांणी
पावंडे-पावडे माथै
अेक-न-अेक आखर छोडती जावै ।

सबदां रा टुट्योड़ा सांचा सूं
बळ'र गिरतो अणुभव छटपटावै है
अर गुजरता वगत री गोद मांय
चिप'र सू जावै है–

आपणा कमरा ई अजनबी बण'र
वी सैं अणुभवां नै बारै काढ देवै
जिणां नै रोजाना बदळण आळा रंग

खनै धुंआळी सारू किचरीज्या तिनका
मयस्सर नी होय सकै
क्यूंकै सबदां रा सांप सैं दड़ा में है

जिका आपरै सरीर माथै
सबघा री धार लगायोड़ा
घात मांय बैठा है–

हूं इतरो समझदार कोनी व्है सक्यो
जो इण धरती री आबोहवा मांय
सोरी सांस लै सकूं

हूं तो आखरां नै समेटतो-समेटतो थकग्यो हूं
अर आ कमबख्त जिनगांणी है
जिकी आपरी आदतां सूं बाज कोनीं आवै ।

किण देख्यो है ?

नसां मांय भाजता तणाव रै रगत नै
किण देख्यो है ?
रंगरळियां रो फिलमी उजास सूं कदै तो
घर चोवारा-चमकै
अर कदै-कदै अेक चिड़कली री आवाज सारू

घर-आंगण तरसै
भीतां रै तूंवै पलस्तरां मांय लुकयोड़ी
अेकळपणै री परतां किण देखी है ??

सरणाटा पीवती गळियां
टाबरां रै सोर सूं चोक जावै कदै-कदास
अर म्यूजियम रै चोकीदार ज्यूं
टूट जावै मांय सूं कदै-कदै
नाड़ियां सूं जुड़या दरद रै प्रवाह नै/किण देख्यो है ??

कुण कैवै आजादी कोनीं ?

— भंवर भादानी

कुण कैवै है
बोलण री/आजादी कोनीं ?
खुली छूट है/सहर रै फुटरापै
गजल री नाजुकता
अर
कविता री/कलात्मक अभिव्यक्ति माथै
भासण झाड़ण री ।

छूट है अथाग/भासा नै चाटण री
कविता खातर/चांदा मामा नै चंचेड़ण
अर
भासाई दंगा करावण री ।

छूट है अणमाप
बधतै कोढ़ी नगरै नै
पगां सूं/चींथण री
धोळै कबुड़ै री/गावड़ मसोसण री
अर
सिकारी कुत्ता पाळण री ।

छूट है मोकळी
जूता चाटण री/फर्राटै सूं दौड़ण री
हवा सूं बात्यां करण री
अर
माटी री मूरत्यां तोड़ण री ।

छूट है उणां नै/पूंगा उघेड़
धूप चाटण री
अर

फसलां री सोनलिया भळभळ नैं
कोठार बंद/राखण री ।

छूट कोनी तौ
फगत आजादी रै दुरुपयोग री
वै सगळा/करै है
दुरुपयोग आजादी री
जिका
सोचै है कोड़ी नगरी/खोल राखी है
खिड़कयां/मिटावण अमूजौ

देस-द्रोही है
वै सगळा
जिका नाच नी सकै/तबलै री थाप
वांसरी री धुन
मिदर रै टंकोरां
अर
चांदी री रमझोळा साथै ।

जानलेऊ है
वै बापड़ा/नागड़ा
जिका/धूंओ पीवै
अर
फूंक सूं/ओट्योड़ी
आग सुळगावै ।

कुणकैवै
म्हांनै
आजादी कोनी
बोलण री ?

आ
कंवरिया साव ई
झूठ/साखी है
बीसोगतै सूरज
अर
अवसरवादी चांद री ।

पड़ूत्तर

चघती जावै है
श्रांतरो-हररोज
सवाल भर पड़ूत्तर बिच्चै ।

हररोज चालै है भतूळिया
सवाळां रै धोबी पिछाट सारू
उठै है च्यारूंमेर
काळी कळूट जांमरण

गुलियोड़ी श्रांख्यां
चूरण खातर
चालै है तीर
डूंगरां रै गोरवां सूं
श्रांख्यां रा फोड्या
वींधण सारू
चालै है
सबद-बेधी बांण
नूंवा सवालां रा
गरभ पटकण सारू
पण सेवट
सरू हुगी है
कवायद
उठण लागगी है
श्रांगळयां
काढण सारू
घांटा उळझ्योड़ा पड़ूत्तर ।

मछली रौ न्याव

मछली रौ न्याव
नैनो रो
मोटी रै पेट में
पूग जावणो व्हे
म्हारा सागर देवता !
थूं तो श्रा जांणे है

के श्रौ/न्याव
पांणी माथै तंरती/चूड़ी उतार
मछल्यां सारू
छोटोड़ी रै गळै
लटकती तलवार व्है।

थूं जाणै है, प्रभू !
के श्रो न्याव/श्रौरूं की कोनीं
धींगामस्ती/श्रर/मरजी है
वडोड़ी 'व्हैल' री
श्रा वात तौ थूं भी जांणै
के श्रो न्याव/सिवट/छोटोड़ी मछल्यां री मौत
श्रर/मगरमच्छां रै मोटै पेट री
थोथ भरण खातर व्है ।

पण

म्हारा ग्यान गुरु/थारी लीला है अपरंपार
म्हनै इण री ग्यांन वतळाव
के'
पांणी रौ श्रौ न्याव
थे कींयां पूंचायो
म्हारै इण/पसरचोड़ै थार तांई ?
थे

थांरी/परसादी रै वतौर
पीणा सांप/कींयां पूगाया श्रठै ?
जिका/श्रादमी सूं मूंडो भिड़ा'र
पी जावै/उणां री सांस-भरोसौ
श्रर रैय जावै/वाकी उणां री ल्हास ।

थूं थारी सागर मुदरा
तोड़'र/म्हनै वता/श्रो भेद ।

म्हारै अन्तस में

● आईदानसिंघ भाटी

म्हारै अन्तस में
मेहक रैया है फूल
कैवता वातां सुगंध री
मन भांगे छंद री ।
म्हारी आंख्यां सांमी नाच रैया है लोग
नाचण रा न्यारा-न्यारा तार
कांकड़ां अणपार ।

फूल री मेहकणी
मिनख री नाचणी
दोन्यूं अेक सिरकी ई व्है
अेक सिरको पसराव ।

मिनख रै नाच में लय नीं
उणरा तार बेसुरा व्है जावै
अर वां विखराव
काया में ऊंडो उतर जावै
बींधती, ऊंडो घणी ऊंडो
आदमी री मजबूरियां री
विखरयोड़ी कड़ियां री
अणकयी कैवती दास्तां ।

आंख्यां सूं अलेखूं वातां कर जावै
औ पसराव
नापती आपो समूळ
म्हारै अंतस में महेकता फूल
अर म्हैं अेकलो ।
खेतों में पाकयोड़ो धांन
अर चिड़ियां री चोवारै चुग जांणी
टावर सारू राख्योड़ो दूध

मिन्नी रो छानैं सूं पी जांणो
जिनावर ई जद आदमी री
मजबुरियां वधावै
म्हारो अंतो कुरळावै
पूछै मेहकती सुवास नैं-
थारो सुवास म्हारै तांई होज है
के उण जागा भी है
जठै कबीरो अेकलो ऊभो है

बाळ'र आपरो आसरो
जठै जैर रा प्याला
लाग्योड़ा है होठां सूं
बीध्योड़ा है हिवड़ा
थारो पसराव है कांईं उण जागा
जठै अै अण होणियां कुरळाई
मुळकता फूल पोड़ नैं चाबजावै
भरियोड़ी आख्यां तिरतै पांणी नैं
मांय रो मांय ही'ज पी जावै ।

आंख्यां में अवकाई आवै-
आंतरा री लाय रो सिळगतो अंगारो
अदीठ लावो
भोभर सूं दवियोड़ो कुण देखै
क्यूं कर देखै ?
पण मेहकता फूलां री सुवास
सगळा ही चावै/सरावै ।

आदमी री निजू बातां री
कुण ठा राखै ?
कुण पळटै सुवकता पानां पोथ्यांरा ?
जठै मीरां री पीड़ा
दाझ्योड़ा हिवड़ा गावै ।

कितरां छोड़्या है सैंज पूलड़ा
मिनख री भासा सारू
म्हारै हियै रै हिलोरां
मेहकता फूलां रो पसराव

च्यारूं मेर विखरयोड़ी निजता
उणरी कुरळाटी पूछै–
थनै ठा है ?
इतियास किणनै कैवै ?
थनै ठा है वातां कांई व्है ?

अर मून लीन्होड़ा होठां कांनी जोय
वो बरड़ावै–
ख्यातां वै ही' ज नीं जिकै
थारी बड़गड़ां री टापां में सुणीजी
इतियास री अरथ
सन्-संवत्-तोप गोळयां री कोरी
गरजणी व्है कांई ?

प्लासी, वाटरलू, करबला, कुरूखेतर
यां री कांकड़ां में बांध्योड़ा थारा आखर
कठैई पीड़ रै उण पगोथ्यै चढ़िया
जठै नीं रंग भीनी रातां ही
नीं बड़गड़ां री वातां अर तोपां रा गरणाटा
अदीठ कांकड़ां में कैद वांरी जूंण
उणसूं कणै'ई तो पूछ्यो हुतो
गांव, नांव, ठांव–
कणै ई तो की व्हैती पिछांण
खुद री पांण।

म्हारै मेहकता फूलां रा मुखड़ा
नीचा व्हैग्या
माटगी अंत री सुवास
आंख्यां सांमी नाच रैया है लोग
नाचण रा न्यारा-न्यारा न्याव।

हेलाळ

पग-पग जोवतो थारी वाट
खांचता थारी लैण
जद म्हैं आगो, घणो आगो आयग्यो
थे अळगा करल्या हाथ
रिन-रोही बीच में।

थारा जद खोज्या म्हैं खोज
थूं अंधारै मांह अलोपग्यौ ।
कितरां री पीड़ा रा लोन्हा
परतख डांम
थूं कितरां नै हंसावण ऊभो गोरवै
खळां मगरां, ताळ
रक्तियाणी धर री कोरणी
थूं दे जावै दरसाव
तपतै तावड़ै, हेताळू घण हेत सूं
हे म्हारा भव-भव रा नेही नेह
थूं पग-पग वंधायौ धीज
ठोकर खावतां ।
पग-पग माथै झाली है म्हारी बांह
भूल जावतां ।
म्हारी आंख्यां री काढ़यो गींड
थूं म्हारै नैणां में सुरमो सारियो
म्हारै रूं-रूं में बोल पिरोय
बतायौ मारग मिनखां जूणरो ।
थूं राख्यौ जुग-जुग सूं ख्यांल
ऊजड़ मारगां ।
आज इण चमकीला परलाटां बीच
म्हैं ऊभो हूं अेका-अेकलो ।
अेकर तो आय'र करलै बात
बतावै पाछो पळकतो दरियाव
म्हारी ठांव–
जिण जागा आय'र
वळती पगथलियां भूलग्या ।
म्है भूल्यो हूं अैनाड़, म्हारा हैज !
अेक'र तो बतादे सांचा बोल
परतख पीड़रा ।
अमूजणी अर पळकतै तारां रै इण
भीभरियै जंजाळ सूं
थूं आय'र वारै काढ़ ।
बतादे वाहो'ज दीठ
जठै सीसां रा हिवड़ा पीघळै ।

अै म्हारै मन रा मोद
इण सड़कां री धमचक मांय
पगां नै राहां सूंप दै
आंगळियां सूं अेक'र आ'र बताय
खूंट थूं मिनखां जूंण री ।
अै म्हारा घणा हेताळू हेज
अेक'र वो देख'र जाय
लाल मजीठ ज्यूं-खुद री दीठ सूं ।

आ मा !

● मोहन आलोक

आ मा !
आ !!
आपरी ममताळू छाती पर
जुद्धां रा सेल
भेलती आ !

उतार
थारो ओ रणचंडी रो सस्त्र सिणगार
हाथ मांय भाल्योड़ो
ओ खप्पर छोड !
परियां छोड !!

क्यूं मा ?
क्यूं पांगरी या मांय
आ तातो रगत पीवण री होड ।

कुण रो रगत मा ?
दूजो कुण हो ?
क्यां तांईं मा ?
अंत क्यां तांईं भरया थूं
आप क्योडै
निसास भर हारतै
हाथां सूं तलवार बगा'र
घरां सिधारतै–
मिनख रै चेतना रा चूंटिया ।

क्यां तांईं ?
अंत क्यां तांईं ?
थूं फेरूं, फेरूं अर फेरूं
थमाई/निबळै हाथां मांय सबळ कटार

बता मा !
कुण री छाती मांय उतरी पछै
वीं री लपलपाती धार

कुण रै हाथां चढ़ी
वधी मां ?
थूं/देस/काळ
अनै संस्कृति रै सीमाणां
क्यूं हुयी मा ?
थूं जुद्ध रै दोनूं ई पखां रै साथै
आपरै जोत रूपां डील माथै
पहर-पहर'र न्यारा पैंहरावा
अर क्यूं विधी मा !
दोनूं ई पखां
दोनूं ई पखा रै
बोल-बाणां ।

विचाळै तौ फकत
थूं ही मा !
फकत थूं !!
क्यूं नीं छुडवाई थूं
दोनूं ई पखां री दुधारी तलवार
मा !
जणां थूं आग बरसावती
फिरती ही दोनूं ई पखां रै
रणखेतर
सावचेत
तौ क्यूं नीं बुलाई थूं
दोनूं ई पखां रै हियै
नेह री निरमळ धार !

अेक सबद

सबद
जणां असमरथ हू जावै
अरथ देवण सूं

तो ओळो रचीजै
ओळी–
जणां विरथ हू जावै
भाव री भोम उपर
तो वात कथीजै ।

वात–
जणां कंय नी सकै
वात रै मांयली वात
तो कविता ग्रावै
ग्रर ग्रापरै परतीकां, विंवां, उपमावां–
रै जरियै
ग्ररथ नै पूग'र
'ग्रेक सवद' हू जावै ।

हिरदै री हूंस

चैनसिंघ वेचैन

म्हैं
इण इतियासां रै भाटां माथै
जिण माथै पैला सूं ईं
भांत-भांत रा केई मांडणां
मडियोड़ा है
मडता रह्या है
फेरूं ईं मंडैला
हां, उणीं'ज माथै
म्हारी अेक
नैनी सोक मांडणी
कोरणी चावूं हूं
आ इत्ती'ज
म्हारै हिरदै री हूंस ।

पण
म्हनै दीखै है के
म्हैं पैला सूं ईं
रगत चूसतै बांणियै/समाज रै
गिरवी पड़ियौ हूं
म्हारै रग-रग में
इणरै करजै री पूरी-पूरी
हिसाब-किताब
अनाप-सनाप ।

म्हनै
पैला इण हिसाब रै मांड़णां नै
धोवणा है/मिटावणा है
राजी-राजी/हंसता-हंसता

इणीं भांत खुद नै
छुडावणो है
आपै-थापै
चणावणो है।

अर हां
इणं वास्तै म्हनै
आंख्या सूं भाटै नै
सीचणो पड़सी
सांसा री डोर सूं पाणी नै
खीचणो पड़सी
सिझ्या नै सुबै रो रूप–
देवतां-देवतां।
तद फळतै विसवास सूं
'भाटो' गळंला-पिगळंला
म्हारी बोवणी अर सीचणी सूं –
हरियो-भरियो व्हैला–
म्हारो हेत !

उणी वगत
म्हारै हिरदै री हूंस
व्हैला पूरी
अेक बदळतै/संवरतै
इतियास रै नांव
केई मांडणां
मंडैला फेरूं-फेर
मंडता रैवैला।

कस्बो

म्है सुणियो के
आज फेरूं अेक ढांणी नै
कस्बै रो-अर
कस्बै नै सेहर रो नांव

दे दियौ गियौ है
म्हनै लाग्यौ के
इमरत बोलियौ
हेताळू रळकता
चौफेर झरणां/अर
गायां-भैंस्यां/छाळियां रैं
मिसरी, दाळ-दूध री ठौड़
मिळावट सूं भिगसो व्हियौ
'कमरसियल' घोळ
गळै मांय/घाल दियौ है
वाळण वास्तै अतस
के प्रकृति रा पंछीड़ा नैं
पांवरा सारू
पांणी रै साथै
धीमै जेहर री जांवण
दे दियौ गियौ है ।

नींवा नूंवी कांई पड़ैं-
हिरदै कोजी वापरै/करड़ाई
वगत करदै वगनौ/उणां नैं बतायदै
छींयां ढळतोड़ी
छिड़ जावै लड़ाई
मच जावै रापट-रोळ
अर आपाधापी ।

मिनख-बापड़ौ
बड़बड़ातौ रैवै
जीवणौ तौ कठै पछै
मरणौ री ई
मूंगाई लखावै
अणमोच्यौ अळूझाड़ौ
पसरै अैड़ौ
रमतौ-रमझोळां करतौ
परवाई व्है जावै कैद
अर गाळियां रा/संकड़ीजता मूंडा
सूरज साथै

पग उठावतै मिनख नै
वापरतां घरै/लखावै जांणै
के सांप रा फण
फु फकारा मारै का
मोटै ग्रजगर रौ/फाटोडौ बाकौ

प्रीत री खांण
ग्रपणांपौ निपजांण
फूलां री कवळाई ग्रर
मुळकतै उणियारै री
चौपाळ ग्रर चौवठै में
भाईचारै रो भाव उमड़ावतौ
परोटतौ/परोसतौ
जीवण रो ग्राधार
पीवतो/मोवतौ
श्रेक तार ढांणी

सेहर दाईं जठै
नीं रमै मुतळब
नीं लाधै श्रेक दूजै रै
खंवै माथै हाथ देय
हंसाय/भरमाय
ग्रर धक्को देय'र धक्कै
ठेट धक्कै दौड़ जांणौ
छि-छि कोनीं
मिनखपणै री जड़ बाढतौ
ग्रोछी हरकतां रो
वापरै कोनीं चिन्योक ई
ढांणी रो प्राकृत पांणीं।

मांयली आंख

● सांवर दइया

धूंवै अर भाप में डूब्या
छापो छांएँ हा म्हे
खाकी रंग जद खार खावै
गळी-गुवाड़
भागळपुर बण जावै !

उणी वगत
सळां भरी चामड़ी
अर धौळा केस बोल्या–
कूड़ ...कूड़...साव कूड़
आंख्यां ही कठै
जिकी फोड़ी
अर जे फोड़ी ई हुवै
तो इचरज कांई
जद आंधां नै आंधा करै आंधा

ठीक है
आंख ई देखै
आंख हुवणी चाइजै
पण
आंख तो मांय चाइजै !

थे जाणौ हौ

थे म्हांनै
जक कोनीं लेवण दयौ
थे जांणौ हौ
जे म्है

आरांम सूं रैवण लागग्या तौ
थांरी नींद
हरांम हुय जावैला !

सूरज री साखी

घूड़ उडावता आया
काळै घोड़ां रा काळा असवार
काळो....काळो....इस्सो कीं काळो....

काळा गाभा
काळा मूंडा
काळा हाथ
काळी बंदूकां री
काळी गोळचां री
काळी बोछाड़
मिनखां नै गंडकां दांई दुत्कार
लातां सूं तोड़ किंवाड़
घरां में बड़ग्या

डावड़चां रै डील सूं
धोळी-दोपारा उतारचा गाभा
मसळी-चूसी-चीथी
बोटी-बोटी
गळी में पूग्यो छापो
चौफेर मचग्यो हाको—
आंधो राज
हाय-हाय !
जोर-जुलम-जब्बर जिन्ना
हाय-हाय !

देखो-देखो—
नारायणपुर में नागो नाच
देखो-देखो—
पारस बीघा-पिपरा में
पांघरै पोळै पापां रा पात
देखो-देखो—

वेलर्छो वळै वारूंमास
दिन हुवै का रात
रोजीना ग्रा' ई वात

म्हैं कांई कैवूं
किणनै कैवूं
ग्रवार-ग्रबार
म्हारी ग्रांख्यां सांमै
गळी में रमती ऊंदरी नै
झपट'र लेयगी चीलख
म्हारी मरदांनगी माथै मूतगी
उपर सूं !

सांची कैवूं
रोजीना देखूं म्हैं
रोजीना देखै सूरज
म्हारी नीं मानो तौ
पूछलौ-
सूरज साखी है ! सूरज साखी है !!

दीठ-अदीठ

चंद्रशेखर अरोड़ा

अेका-अेक हाको, गूंजै कानां में
हिरदै में रम्मत सरू व्है
अेक फालो
फूटै अर भरीजै
(वायोड़ा वीज तो फूटैला इज)

म्है
अदीठ नै अंवैरतो रैयो
इण अलख-जातरा में
पावंडा-पावंडा
तूटतो रैयो मायाजाळ
लोग
छिपावै प्रीत अर पीड़
अर भळै
तरसै वतळावण नै
छटपटीजै
पण कदै भरीजै तीणां वाळी मटको

इण जातरा रै वीच
रोज रोजी अर रोटी
आंधैपणै में वी आ उमर आखी
आ उमर
जांणै कुड़क व्हेती जमीं
जांणै गोफण सूं वेमतळव छूटियोड़ो भाटो
जांणै वनूळियं में फंसियोड़ो तिणको

अदीठ में भटकण रै वावजूद
दीठ में आवै
दुकानां कसायां री—

लटकता हाथ-पग-घांटी अर धड़
च्यारूं मेर बिकतौ ताजौ मांस
के दीखै मिंदर, धरमगढ
निवता हाथ, पग घांटी अर धड़
अठै मिखखां रै साथै
कसाई ई चढावै प्रसाद टकै रौ
राजी करै भगवान नै
अणचाइजतौ मिळै
फेरूं मांनता मांनै, बोलवा बोलै

हदां तूटी लाज री अठै
सिणगारी री सेजां रा मोल हुया
बिकता रैया हाथ, पग, घांटी अर धड़
मुधरी मुळकती रैयी रात
कंवळौ फूल कुमळावतौ रैयौ

आज, दीठ रै दायरै में आवै
घणकरी रम्मतां, कितराई खेल
अथाग मिनख
अर रूखाळा बीच घिरियोड़ी
लाज छिपावतौ
तड़ांग नागौ मिनखपणौ ।

म्हांनीजता मिनख

वै/जिणां री खैर-खबर राखतां
हाडक्यां गाळी
न्याव री उम्मीदां ही उणां सूं
बरसूं-बरस ऊंचायां फिरचौ
थांरी इज्जत रौ भार
वै इज भुगतावता फिरै
म्हारी मजबूरियां नै

धुड़गी वै भीतां
छत जिण रै ऊपर छवाई ही
दुख इण बात रौ उणां नै
के म्हारा पंख क्यूं खुलग्या

क्यूं छोड़ दी म्हैं
परकम्मा देणी उणां रीं
सोचूं
किण करजै रै बदळै
आज तांई अडांणै पड़ियो हौ
मांनीजता मिनखां रै हाथां मांय
उणां री रम्मत सारू

उपरांखर उडियो जद आजैं
पिसतावो नी रैयो
इण निरणै रो
चैरा पिछांण लिया
ओळख लियो असली सरूप
जाण लियो
के अंधारो
केई मिनखां री जड़ां में जमियोड़ो है
अर
सरतिया आंधां इंज व्है
अंधारै सूं जलमियोड़ा विसवास